रिकार्ड– इस पाप की दुनियां ..... ओमशांति प्रातःक्लास 22–7–67
मीठे2 रुहानी बच्चे जानते हैं कि ये पाप की दुनियां है। पुण्य की दुनियां को भी मनुष्य जानते हैं। मुक्ति और जीवनमुक्ति पुण्य की दुनियां को ही कहा जाता है। वहां पाप होता नहीं है। पाप होते ही हैं दुःखधाम,रावणराज्य में। दुःख देने वाले रावण को भी देखा है। रावण कोई चीज नहीं है। फिर भी एफीजी जलाते हैं। बच्चे जानते हैं कि हम इस समय रावणराज्य में हैं ;परंतु किनारा किया हुआ है। हम अभी पुरुषोत्तम संगमयुग पर हैं। बच्चे जब यहां पर आते हैं तो बुद्धि में यह रहता है कि हम उस बाप के पास जाते हैं ,जो कि हमको मनुष्य से देवता बनाते हैं। सुखधाम का मालिक बनाते हैं। सुखधाम का मालिक बनाने वाला कोई ब्रह्मा नहीं है। कोई भी देहधारी नहीं है। वो तो है ही शिवबाबा। वो विदेही है। देह तुमको भी नहीं थी ;परंतु फिर तुम देह लेकर जन्म–मरण में आते हो। तो तुम समझते हो कि हम बेहद के बाप पास जाते हैं। वो ही हमको श्रेष्ठ मत देते हैं। तुम ऐसे पुरुषार्थ करने से स्वर्ग का मालिक बन सकेंगे। स्वर्ग को तो सभी याद करते हैं। समझते हैं कि नई दुनियां जरूर है। वो भी जरूर कोई स्थापन करने वाला है। नरक भी कोई स्थापन करते हैं। तुम्हारा सुखधाम का पार्ट कब पूरा होता है वो भी जानते हो। फिर रावणराज्य में तुम दुःखी होने लगते हो। इस समय है दुःखधाम। भल कितने भी करोड़पति ,पदमपति हो ;परंतु पतित दुनियां तो जरूर कहेंगे ना। कंगाल दुनियां, दुःखी दुनियां है। भल कितने भी बड़े2 मकान हैं। सुख के भी सभी साधन हैं। तो भी कहेंगे कि यह पतित पुरानी दुनियां है। विषय वैतरिणी नदी में गोता खाते रहते हैं। यह भी नहीं समझते हैं कि विकार में जाना पाप है। कहते है। कि इस बिना तो दुनियां ही वृद्धि को कैसे पावेगी?बुलाते भी हैं हे भगवान ,हे पतित–पावन आकर इस पतित दुनियां को पावन बनाओ। आत्मा कहती है शरीर द्वारा। आत्मा ही पतित बनी है। तभी तो पुकारती है। कहा भी जाता है पतितात्मा। वहां पर है पावन आत्मा। स्वर्ग में पावन आत्मायें थीं वो फिर कौन थीं जो कि पतित बनी हैं। यह और कोई समझ नहीं सकते हैं। तुम बच्चों ने ही समझा है। 84जन्मों का हिसाब किसी की भी बुद्धि में नहीं है। तुम जानते हो कि कौन2 84जन्म लेते हैं। भगवानोवाच्य हे बच्चों! तुम अपने जन्मों को नहीं जानते हो। मैं तुमको वृत्तांत सुनाता हूँ कि तुम कैसे 84जन्म लेते हो। कृष्ण की आत्मा ही 84जन्म लेते2 अब अंतिम जन्म में है। ऐसे तो नहीं कि सभी रथों में बैठेंगे। नहीं। उनका एक रथ मुकर्रर है। उन्होंने तो फिर बैल भी दिखाया है। गाड़ी भी दिखाई है। गउपाल आदि नाम सुनकर बैल कह दिया है। तुम हो तो मनुष्य। तुमको ही ज्ञान घा खिलाते हैं। ज्ञान जनावरों को तो नहीं सुनावेंगे ना। यह अबलायें मातायें हैं जिनको कि बाप ज्ञान पढ़ाते हैं,योग सिखाते हैं। तुम जानते हो कि बाबा इस तन में आया हुआ है। हमको ले जावेंगे। उनका यह रथ है। जिस रथ में आते हैं आते हैं वो भी मनुष्य है। जरूर उनकी भी आत्मा तो होगी ना। तुम बच्चे जानते हो इस आत्मा ने 84जन्म का चक्र लगाया है। इस आत्मा का पहले2 कौन सा जन्म था सो अभी तुम जानते हो। फिर अपने पर भी आओ। अपने पर वो ही आते हैं जो कि पुरुषार्थ करते हैं। जो अच्छे पुरुषार्थी हैं वो ही अपने को समझें कि हमने ही पूरे 84जन्म लिए हैं। फिर इन (ल.ना.)के साथ ही हम राज्य करेंगे। एक ने तो 84जन्म नहीं लिए हैं। राजा के साथ प्रजा भी चाहिए ना। तुम ब्राह्मणों में भी सभी नम्बरवार हैं। कोई राजा–रानी बनते हैं,तो कोई प्रजा। तुम कहते हो कि हमने भी बाबा के साथ ही 84जन्म भोगे हैं। अभी हम नर से नारायण बनने आये हैं। बाप कहते हैं कि बच्चों दैवी गुण भी धारण करने हैं। क्रिमिनल ,शैतान आंखें हैं। कोई को देखने से ही विकार की दृष्टि हो जाती है तो उनके 84जन्म नहीं होंगे। वो नर से नारायण नहीं बन सकेंगे। जिनकी आंखों पर जीत नहीं पहनी जाती है उनको समय लगेगा। जब जीत लो तब कर्मातीत अवस्था हो। सारा आंखों पर ही मदार है। आंखें ही धोखा देती हैं। आत्मा इन खिड़कियों से देखती है। इसमें तो डबल आत्मा है। .....हमारी दृष्टि आत्मा पर जाती है। बाप आत्मा को ही समझाते हैं

कहते हैं कि मैंने शरीर लिया है तभी तुमको समझाता हूँ। तुम बच्चे जानते हो कि बाप हमको सुख की दुनियां में ले जाते हैं। यह है वैश्यालय ,रावणराज्य। तुमने इस वैश्यालय से किनारा कर लिया है। कोई बहुत आगे बढ़ गये,कोई पिछाड़ी हट गये। हर एक कहते भी हैं कि पार लगाओ। अब तो जावेंगे ही सतयुग में ;परंतु वहां पर उंच पद पाना है तो उसके लिए मेहनत करनी है। पवित्र बनना है। मुख्य बात है बाप को याद करो तो विकर्म विनाश हों। यह है पहली2 सब्जेक्ट। तुम अब जानते हो कि हम आत्मा एक्टर है। पहले2 हम सुखधाम में थे। हम अब दुःखधाम में आये हैं। अब बाप फिर सुखधाम में ले जाने आये हैं। कहते हैं कि मुझे याद करो और पवित्र बनो। कोई को भी दुःख ना दो। बाबा सुनते रहते हैं एक/दो को बहुत दुःख देते रहते हैं। कोई में काम का,कोई में क्रोध का आया ,हाथ चलाया ,चमाट मारी। बाप कहेंगे कि यह तो दुःख देने वाली पापात्मा है। पुण्यात्मा कैसे बनेगी?अब तब पाप करते रहते हैं। यह तो नाम बदनाम करते हैं। सभी क्या कहेंगे?कहते हैं हमको भगवान पढ़ाते हैं। हम तो मनुष्य से देवता विश्व का मालिक बनते हैं। वो फिर ऐसे काम करते हैं क्या?इसलिए बाबा कहते हैं रोज रात को अपने को देखो। अगर सपूत बच्चे होंगे तो चार्ट भेजेंगे। भल कोई2 चार्ट भेजते भी हैं ;परंतु साथ में यह तो लिखते ही नहीं हैं कि हमने किसी को दुःख दिया वा यह भूल की। याद करते रहें और काम उल्टा करते रहें यह तो ठीक नहीं है। उल्टे कर्म करते2 देहअभिमानी बन जाते हैं। फिर चाहे तो टीचर है वा स्टुडेंट हैं। यहां पर तो स्टुडेंट भी टीचर बनते हैं। स्टुडेंट्स को टीचर पढ़ाते हैं फिर जबकि वो भी टीचर बन जावे। जब समझाने लग जाते हैं कि यह चक्र कैसे फिरता यह तो बहुत सहज है। एक ही दिन में टीचर बन सकते हैं। सैंटर्स पर आते ही हैं टीचर बनने लिए। सात रोज में पढ़ाने वाले टीचर से भी उंच टीचर बन सकते हैं। तुमको 84जन्म का राज समझाते हैं। टीच करते हैं। फिर जाकर उस पर मनन करना होता है हमने 84जन्म कैसे लिए। उस टीचर से भी अच्छा बन जाते हैं। जो टीचर से टीचर बनते हैं वो उस सिखाने वाले से भी दैवी गुण जास्ती धारण कर लेते हैं। बाबा सिद्ध करके बता सकते हैं। दिखावेंगे। बाबा हमारा चार्ट देखो। हमने जरा भी किसी को दुःख नहीं दिया है। बाबा कहेंगे जिसने तुमको टीच किया उनमें तो अवगुण है। यह तो बच्चा बहुत मीठा है। अच्छी खुशबू निकाल रहे हैं। टीचर बनना तो सेकेंड का काम है। टीचर से भी स्टुडेंट याद की यात्रा में तीखे निकल जाते हैं। तो टीचर से भी उंच पद पावेंगे। बाबा तो पूछते हैं ना कि किसी को टीच करते हो?रोज शिव के मंदिर में जाकर टीच करो। शिवबाबा कैसे आकर स्वर्ग की स्थापना करते हैं,स्वर्ग का मालिक बनाते हैं। समझाना तो बहुत ही सहज है। बाबा को चार्ट भेज देते हैं कि बाबा हमारी ऐसी अवस्था है। चार्ट रखने से हमको बहुत खुशी होती है ;परंतु यह तो देखो कि किसी को दुःख तो नहीं देते हो। कोई विकर्म तो नहीं करते हो। क्रिमिनल आई कोई उल्टा–सुल्टा तो काम नहीं करते हैं। अपने मैनर्स कैरेक्टर्स देखने हैं। सारा मदार आंखों पर है। आंखें अनेक प्रकार का धोखा देती हैं। जरा भी चीज उठाकर खाया तो वो भी पाप बन जायेगप्र ; बिना छुट्टी के उठाया ना। यहां पर बहुत कायदे हैं। शिवबाबा का यज्ञ है ना। चार्ज वाले के बिना पूछे चीज खा नहीं सकते हो। एक खावेंगे तो दूसरे भी वैसे ही करने लग जावेंगे। वास्तव में यहां पर कोई भी वस्तु ताले के अंदर रखने की दरकार नहीं है। नौकरी की तो बात ही और है। वास्तव में तो यहां पर कोई बाहर का नौकर भी नहीं होना चाहिए सिवाय मेहतर के। लॉ कहता है इस घर के अंदर किचन के सामने कोई भी अपवित्र आना नहीं चाहिए। बाहर में तो पवित्र ना पवित्र का खयाल नहीं होता है ;परंतु पतित तो अपने को कहते हैं ना। सब पतित हैं। कोई बल्लभाचार्य को वा शंकराचार्य को हाथ लगा नहीं सकते हैं ;क्योंकि वो समझते हैं कि हम पावन यह पतित हैं। तो यहां पर भल पतित हैं तो फिर भी (पुरुषार्थ) अनुसार विकारों का सन्यास करते हैं। तो निर्विकारी के आगे विकारी मनुष्य माथा टेकते हैं।

———की रही हुई रगतें–

तुम बच्चों को सबको मैसेज देना है कि परमपिता परमात्मा निराकार यह 2 कहते हैं। वो ही उंच ते उंच है। देहधारी भगवान कैसे हो सकता है?यह तो इम्पासिबुल है। ब्र.वि.शंकर को भी भगवान नहीं कह सकते हैं। भगवान एक ही है। वो ही सर्व का सदगतिदाता है। बाकी सब भक्तिमार्ग के शास्त्र हैं। ज्ञान का सागर पतित–पावन एक ही बाप है। फिर पानी की नदी को क्यों कहते हैं पतित–पावनी?पानी ही से अगर सदगति हो जावे फिर गुरुओं पास क्यों जाते हैं?कितने ढेरों जाते हैं। दरकार ही नहीं रहती है। जबकि गंगा पतित–पावनी है फिर तो मंत्र जन्त्र आदि लेने की दरकार ही नहीं है। कितनी तो अंधश्रद्धा है। तुम उनको दाढ़ी से पकड़ सकते हो। बच्चों को खड़ा होना चाहिए। तीर्थ यात्राओं पर गुरू लोग बहुत होते हैं। वहां पर सेंटर्स खोलते तो हैं ;परंतु इतने उठते नहीं हैं। गुरू लोग तो बेड़ा ही गर्क कर देते हैं। सभी मनुष्य उनसे डर जाते हैं कहीं पर कोई श्राप नहीं दे देवें। बाप तो दुकानदारों को भी बहुत अच्छी राय देते हैं। है बिल्कुल सहज। फिर भी थोड़े चित्र चाहिए। उसमें से भी सीढ़ी तो बहुत ही अच्छी है। वो भी बॉम्बे में छपवा रहे हैं। जन्माष्टमी पर मिल जावेगी। उसमें से भी सीढ़ी तो बहुत ही अच्छी है। वो भी बॉम्बे में छपवा रहे हैं। जन्माष्टमी पर मिल जावेगी। गीता का भगवान कृष्ण नहीं है। शिव है वो भी समझाने से सिद्ध हो जावेगा। अपनी भी और औरों की भी तरक्की करेंगे। दुनियां में दिन प्रतिदिन बहुत खराबियां होती जाती हैं। इसलिए अब बाप को याद करते हुए सर्विस में लग जाओ। बहुत सहज ही है। आम।

2– पहले2 तो शिवबाबा की ही भक्ति होती है। वो तो बड़ा बनावेंगे ना। पहले शिवबाबा की अव्यभिचारी भक्ति चलती है। फिर देवताओं की मूर्तियां बनाते हैं। उनके फिर बड़े2 चित्र बनाते हैं। उसमें तुम पांडवों के भी बड़े2 चित्र बना देते हैं। स्वदर्शन चक्र भी तुम्हारा है। उन्होंने तो फिर विष्णु को दे दिया है। वि. का भी बड़ा2 चित्र बनाते हैं। दीपमाला पर पूजा भी लक्ष्मी की करते हैं। अर्थ नहीं समझते हैं। चार भुजाओं वाला कोई मनुष्य होता है क्या?अभी तुम बच्चों ने अर्थ समझा है ना। कितना फर्क है। लक्ष्मी की पूजा 12मास में एक बार करते हैं। सरस्वती की रोज2 करते हैं। यह भी बाबा ने समझाया है कि तुम्हारी डबल पूजा होती है। मेरी तो सिर्फ आत्मा माना लिंग की ही पूजा होती है। तुम्हारी तो सालिग्रामों के रूप में फिर देवताओं के रूप में भी पूजा होती है। रुद्र यज्ञ रचते हैं तो कितने सालिग्राम बनाते हैं। तो कौन बड़ा हुआ?तभी बाबा बच्चों को नमस्ते करते हैं। कितना उंच पद प्राप्त करवाते हैं। शास्त्रों में यह बातें थोड़े ही हैं। वो भक्तिमार्ग की कथायें तो जन्मजन्मांतर ही तुम सुनते आये हो। बाबा कितनी रहस्य वाली बातें सुनाते रहते हैं। तुम बच्चों को कितनी खुशी होनी चाहिए। हमको भगवान पढ़ाते हैं। भगवान–भगवती बनाने लिए तो कितना शुक्रिया मानना चाहिए। बाप की याद में सोने से सपने भी अच्छे आवेंगे। सा. भी हो सकता है। ओम।

3–कम पुरुषार्थ करने वाले स्वर्ग में तो आवेंगे ;परंतु कम पद पावेंगे ;क्योंकि राजधानी स्थापन हो रही है ना। कोई तो हार अगर खा लेते हैं तो अपने को फांसी दे लेते हैं। जन्मजन्मांतर का पद भ्रष्ट हो जाता है। कहेंगे कि बाप से तुम यही पद पाने आते हो। बाप इतना उंचा राजा बने हम कोई प्रजा थोड़े ही बनेंगे। बाप तो गद्दी पास बैठा हो और बच्चे दास–दासियां बनें कितनी लज्जा की बात है। पिछाड़ी में तुमको सभी सा. होगां फिर बहुत पछतावेंगे कि नाहक ही हमने ऐसा किया। सन्यासी भी ब्रह्मचर्य में रहते हैं तो विकारी सभी उनको माथा टेकते हैं। पवित्रता का मान तो है ना। किसी की तकदीर में नहीं है तो बाप आकर पढ़ाते भी हैं तो भी गफलत करते रहते हैं। याद ही नहीं करते हैं तो बहुत विकर्म कर लेते हैं। तुम बच्चों पर अब यह ब्रहस्पत की दशा है। इससे उंच दशा और कोई की होती नहीं है। तुम .....बच्चों पर चक्र लगती रहती है। मीठे2 रुहानी सपूत,आज्ञाकारी,दूसरों तक मैसेज पहुंचाते रहते हुये बच्चों ही प्रति मात–पिता बापदादा का रुहानी यादप्यार और गुडमार्निंग।